परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : 07759863369

तक्ष शिला

बाल संवाद

मेरे दोस्तो,

आपके हाथो में मैं हूँ 'चहकने की ललक'। हां यही है मेरा। मेरा यह नाम मुझे लिखने वाले मेरे बाल लेखको ने दिया है ''ये परिवर्तन'' के बच्चे है, जो मेरे लिए लिखते हैं।

उनका यह मानना है जब वह मुझसे जुड़े, मेरे लिए लिखा तो उन्होंने खुद की उन्मुक्त महसूस किया। और वह बेहद खुश थे। उन दोस्तों का आभार।

आपकी ही
चहकने की ललक

कहानी

लालच बुरी बलाय है

किसी गांव में दो भाई रहते थे एक अमिर था और दुसरा गरीब था। दिवाली का दिन आया उस दिन अमिर भाई बहुत खुश था और गरीब भाई दुखी था गरीब भाई गांव के बाहर एक बगीचा में जाकर बैठा हुआ था और रो रहा था। उसी समय रास्ते से एक बूढ़ा व्यक्ति जा रहा था उसने गरीब लड़का को देखकर उसके पास गया और उससे बोला क्या हुआ है तुमको तुम क्यों रो रहे हो आज तो दिपावली का दिन है सब लोग खुशी से है तो वह बोला की मैं बहुत गरीब हूं। तो बुढ़ा व्यक्ति बोला तुम मेरे साथ चलो गरीब लड़का उसके साथ गया और बोला की तुम मेरा गठरी उठा दो और मेरे घर पहुचादो लड़का वैसा ही किया उसके घर गया तो वह लड़का को एक पत्थर दिया और बोला कि एक गुफा में रख देना लड़का पत्थर को लेकर गया और गुफा में रख दिया। वहा उसको एक परी मिली वह उसको उसके घर गई और लड़का के पास कुछ भी नहीं था वह बहुत ही धनवान बन गया। उसके घर नौकर भी लग गए। गरीब लड़का भी खुशी रहने लगा तब तक उसका भाई आया और पूछा की तुम इतना धनी कैसे बन गया तब सारा बात अपने भाई से बता दिया उसका भाई भी वैसे किया और वो अमिर नहीं गरीब बन गया। इसलिए कहा जाता है दूसरों का धन देखकर कभी लालच नहीं करना चाहिए।

अनुजा सिंह, कक्षा–7

चुटकुला

एक अंग्रेज था, वह किसी गली से गुजर रहा था, उसी गली में एक भैंस आई, भैंस ने उसे मारा

वह चिलाते–चिलाते डॉ. के पास गया, डॉ. ने पुछा क्या हुआ है। उसने बोला आई एक गुजरिंग टू गली कमिंग एड़ भैंसड़। तोड़ दिया टगड़ा कर दिया लगड़ा।

संध्या कुमारी

कहानी

मेरा घर मिया के भटकन शर्मा बोला है मेरे घर के सामने एक बहुत बड़ा तलाब है इस तलाब में हमेशा पानी भरा रहता हैं मेरे गाँव के लोग इसको गंगा जी कहते हैं एक दिन कि बात है मैं तलाब के किनारे खड़ी थी उसी समय मुझे एक मोटा सा सांप दिखा और मैं सांप को देखकर मैं डर गई और अपने घर चली आयी तब से मैं तलाब के पास कभी नहीं जाती हूं।

पुजा कुमारी, कक्षा–5

कहानी

बारिश

बारिश के मौसम में भिंगते हुए स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है, लेकिन मेरी अम्मी मुझे डाटने लगती है। कि तुम स्कूल मत जाओ। अगर तुम भिंगते हुवे स्कूल जाओगी तो तुम्हारा तबियत खराब हो जायेगा मैं अपनी मम्मी की बात नहीं मानी जब मम्मी खाना बनाने लगी तो मैं चूपके से तैयार होकर बारिश में ही भिंगते हुवे स्कूल चली गई। जब मैं स्कूल गई तो पुरा भिंग गई थी उसी समय मूझे ठंड लगने लगा मैं फिर घर गई तो मम्मी मूझे मारने लगी और मैं रोने लगी।

निभा कुमारी, कक्षा–5

कहानी

खेत

हम अपने खेत में जब गये थे तो मेरे खेत के पास एक पेड़ है जहाँ पर हमलोग काम करने के बाद आराम करते हैं। खेत में धान रोपने के लिए मेरे पापा मेरे भईया गये हुए थे। मैं खाना लेकर के गई खेत में। मैं खेत में जाकर पेड़ के पास बैठ गई और मैं जब देखी तो पेड़ के उपर बंदर था मैं खाना रखकर पापा को बुलाने लगी। तब तक बंदर मेरा खाना लेकर भाग गया और वह खाना को जूठाकर दिया। पापा गुस्सा होकर मुझे मारने लगे और बोले तुम खाना छोड़कर क्यों गई। तब से मुझे बंदर को देखकर बहुत डर लगता है।

प्रिती कुमारी, कक्षा–4

आम

कहानी

आम का समय था हम अपने बगीचा में आम बिनने गये हुए थे तो मुझे दो पक्का हुआ आम मिला मैं आम को दौड़ कर उठाई और बहुत खुश हुई, उस समय बहुत तेज धूप भी निकला हुआ था। मेरी मम्मी मुझे बगीचा जाने से मना की थी, लेकिन मैं चली गई थी। आम को लेकर मैं अपने मम्मी को दी देने में डर भी लग रहा था लेकिन मेरी मम्मी उस समय मुझे कुछ भी नहीं बोली और आम काटकर हमलोगों को दी। हमलोग मिलकर आम खाये।

रितु कुमारी, कक्षा–4

कविता

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी बिल्ली मौसी
कितने चूहा पकड़ी और कितने चूहा खाई है।
क्या बतलाए भैया तुमको
मूझे मिला बस एक ही चूहा
छोटा–सा मोप वाला
निकला वह भी मरा हुआ

बंधू समसाद

चुटकुला

एक नदी के किनारे एक आदमी और एक औरत बैठे थे। दोनों एक दूसरे से अपरिचित थे तभी आदमी बोला यह दुष्ट बच्चा किसका हैं आपका है जो मुझे धुल फेक रहा हैं औरत बोली नहीं यह मेरा भतिजा है। मेरा बेटा तो वह है जो अभी आपका जूता नदी में बहाकर आ रहा है।

स्नेहा पाण्डेय

कहानी

आम

हमरा गाँव में हमरा घर के पीछे बहुत ही बड़ा आम के पेड़ बा ओही पेड़ पर से हम और हमार दोस्त रोज आम तुरे नी सन, और ओही जी बईठ के आम खा जानी सन एक दिन लेकर आम के पेड़ ह उ आदमी हमनपी के आके आम तुरते में पकड़ लेहलस और कहे लगलन की तु लोग चल लोग हम तहन लोग के घरे जाके बोल देतानी त हमनी के कहनी सन की अब से ना तुरेन सन तु हमनी के घरे जा के मत कह।

काजल कुमारी

कविता

अरून वरूण दोनो भाई

अरून वरूण दोनों भाई
एक बरफी पर किया लड़ाई
अरून बोला मैं लूंगा
वरूण बोला मैं लूंगा

झगड़ा सुनकर मम्मी आई
दोनों को दो चाटी लगाई
आधा लेलो अरून बेटा
आधा लेलो वरूण बेटा

ऐसा झगड़ा कभी न करना
दोनों भाई मिलकर रहना।

रंजीत कुमार, भवराजपुर

कविता

मोटु दादा मोटु दादा
सब के मन को भाते हैं
बहुत बड़ा तोंद है उनका
वह बहुत खाना खाते हैं।

जब वह जाते शादी में
आधा खाना खाते हैं और
आधा लेकर चले जाते हैं।
उनको लगती रात में भूख
तो बचा खुचा खा जाते हैं।
मोटू दादा ...

उठते सुबह में लेते लोटा
खेत में दौड़ जाते हैं।
जब वह जाते बाजार में
बच्चे उन्हें रिगाते हैं
मोटू दादा मोटू दादा

विनय कुमार कक्षा 8

कविता

मोटू दादा

एक थे मोटू दादा
खूब खाते थे खाना
लूढ़क–लूढ़क के चल चलते थे
बच्चे खूब चिड़ाते हैं।
मोटा दादा मोटा दादा

एक बार वह गये
गरम–गरम पकौड़े खाने
तो पेट आई गड़बड़ी
डॉक्टर ने इलाज बताया
गरम–गरम पानी पिलाया

विपुल कुमार कक्षा 7

चुटकुला

दो बुढ़े व्यक्ति नाव में सफर कर रहे थे एक कमलदेव थे और दुसरे मोटे दादा, कमलदेव बोले मोटे भाई अगर बारिश आ गया तो क्या करेंगे। मोटे दादा बोले की नाव के निचे छेद करेंगे।

एक बार एक बाजार में एक मोटे दादा दुकान लगाये थे वो सब्जि बेच रहे थे। एक ग्राहक आकर बोला आपकी सब्जी कैसी है। मोटे दादा बोले ताजी है दस दिन से धड़ाधड बेच रहा हूं।

विक्की कुमार

कविता

अजीबो गरीबो दुनियां

अजीबो गरीबो देखी मैंने दुनियां
ऐसी दुनियां जो गोल कभी तो
चौड़ी, तब आये वास्कोडिगामा
जो उसने लगाई तैराकी तब
जाकर मिला हमे यह पूरी दुनिया गोल

मैं सोया जब रात को दिन में
हाथ पैर रहते कही और मेरे
सर के उपर गर्दन मेरी
उसके उपर इन्द्रधनुष रहता है
गर्दन में यह अजीबो गरीबो

है दुनिया मेरी
कभी धरती ऊपर, कभी आकाश नीचे
मैं सोचता हूं की यह दुनियां
किसने यह बनाई दुनियां
कोई कहता यह मेरी दुनिया
और मेरी दुनिया है अजीबो गरीबो

नीरज कुमार, कक्षा–10

कहानी

बारिश

बारिश आने से पहले बादल गरजने लगता है बादल जब गरजने लगा तो डर कर हमने मम्मी के पास जाकर छुप गई। मम्मी बोली क्या हुआ है मैं बोली मम्मी मुझे डर लग रहा है कि बादल कही गिर न जाये, उसी समय मेरे पापा आये और बोले नहीं बेटा तुम डरो मत ये बादल गरजता है तो पानी लेकर आता है रात हो गया है जाके तुम सो जाओ मैं अकेले नहीं सो रही थी तो मेरी मम्मी मेरे साथ सोई और मैं अपने मम्मी को कस के पकड़ कर सो गई।

करिना कुमारी, कक्षा–5

कविता

बुढ़िया चला रही थी चक्की
बुढ़िया चला रही थी चक्की
पुरी साठ बरस की पक्की
दोनों में रखी मिठाई
उसपर उड़कर मक्खी आई

बुढ़िया बॉस उठाकर दौड़ी
बिल्ली खाने लगी पकौड़ी
झपड़ी बुढ़िया हार से अंदर
कुत्ता भागा रोटी लेकर।

साक्षी कुमारी कक्षा 6

कहानी

बारिश

बारिश का दिन था। धिरे–धिरे बारिश हो रही थी। हम अपने घर में छिपे हूवे थे। जब बारिश खत्म हुआ तो बाहर निकले और देखे की एक मोटा सांप मेरे घर के सामने पड़ा हुआ है सांप को देखकर मैं अपने पापा को बुलाई मेरे पापा एक बड़ा सा लाठी लेकर आये और सांप को मार कर मूआ दिये। इसलिए मूझे बारिश के मौसम में बहुत डर लगता है।

कविता

राखी की कविता

हम लड़कीयां बहुत अबली
जब देखे, आया अगस्त
सबसे कहते घुम–घुम कर
आया हमारा मन भावन त्योहार

लड़को का बैंक मनी हो जाये खाली
जब आये अगस्त का महिना
देखों आया हमारा खुशियों का महिना

सारे भाई हमशे आकर
राखी बनधवाते और
जाते–जाते हमे बहुत से
तोफे दे जाते

सुबह–सुबह जब प्यारी
सहेलियां अगस्त में बात करें
जहां सूनो यही सुना
मुझे ये मिला मुझे ये मिला

सुष्मिता पाण्डे कक्षा 10

कहानी

बिल्ली और चूहा

एक घर था उस घर में बहुत सारे चूहे रहते थे। उसी घर में एक काली बिल्ली भी रहती थी। वह बिल्ली जब चाहे चूहे को मारकर खा जाती थी। उसके कारण उसके घर में बहुत कम चूहे बच गए। सभी चूहों ने मिलकर फैसला करने के लिए बिल्ली के पास गए और सारे चूहे कांपते हुए बिल्ली से बोले बिल्ली रानी तुम खना को भी अधिक शिकार करती हो इसी कारण चूहे का संख्या बहुत कम हो गया है। बिल्ली रानी तुम हम मित्रों का मना मानी तुम्हारे लिए हर दिन एक चूहा खाने के लिए भेज देंगे। इसी तरह कई दिन बीत गए तब एक नन्हा चूहा की बारी आई उसने उपाय लगाया कि अगर मैं जहर खा लूंगा तो मैं भी मरूंगा और काली बिल्ली भी मर जाएगी।

शशि कुमार राम कक्षा 9

अपनी बात

छुटकी मछली

एक सागर के तल में एक मछली रहती थी
अपनी कहानी घुम–घुम कर वो सबसे कहती थी।

उसकी कहानी कोई न सुना
वो गुस्से में रहती थी
बुढ़े कछुआ गुस्से का कारण पुछा

वह कछुए से कहानी सुनाती थी।
दुर सागर के तल में एक छुटकी मछली रहती थी।

रजनीश भगत, वर्ग–10

विकसारि

धानों की खेती

धानों की खेती में हम सबसे पहले खेत को जोतते हैं। उसको पानी देते है और फिर बीज डालते हैं फीर बीज डालने के 15 दिन बाद हम उसको उखाडे जाते हैं तब तक 15 दिनों से बीज बड़े हो जाते हैं। इसलिए हम उसे 15 दिन बाद दूसरे खेतों में लगाते हैं। धीरे–धीरे पौधे बड़े होने लगते हैं। कुछ महिनों के बाद उनको काटकर बोझा बांधकर घर लाते हैं। फिर उसको आटी बांधकर पिटते हैं। धान को सूप से फटकते हैं। ओसवनी भी करते हैं। फिर मशीन में कुटवाया जाता है उसमें से चावल निकलता है तो उसको बनाकर खाते हैं।

करन कुमार

कहानी

हजाम और मोटू दादा

एक मोटू दादा और एक हजाम था मोटू दादा राजा थे और हजाम राजा के गांव के बगल का था मोटू दादा ने राज दरबार में हजाम को बुलवाया, हजाम मोटू दादा से बोला आप हमें क्यों बुलवाए हैं। मोटू दादा अपने सैनिको से पुछे थे बताओ हजाम को क्यों बुलाया जाता है। सैनिक बोले बाल काटने के लिए, मोटू दादा ने हजाम से बाल काटने के लिए बोले। हजाम बाल काटना शुरू किया। वह साइड साइड का बाल काटने लगा। जब वह बीच का बाल काटने गया तो वह रूक कर बाल देखने लगा, वह देखा की राजा के सिर में दो सिंग है। राजा बोला अरे हजाम रूक क्यों गये बाल काटो और जो देखे थे उसके बारे में किसी को मत बताना, हजाम बोला जी मालिक मैं नहीं बताऊंगा। दुसरे दिन हजाम का पेट फूलने लगा वह डॉ. के पास गया डॉ. बोला तुझे कुछ नहीं हुआ है। तुम किसी बात को पेट में छिपाकर रखे हो जाओ किसी को बता देना तुम्हारा पेट पूचूक जायेगा। वह गया और सारी बात एक पेड़ से बता दिया, उसका पेट पूचूक गया।

अफरोज

तक्षशिला पब्लिकेशन द्वारा परिवर्तन के लिए प्रकाशित।
सज्जा एवं मुद्रणः इमेजिका ग्राफिक्स